explanations which he has given, in the light of the fact that he has accepted to bring a "Discussion Paper" on financing in the domestic context, which was the purpose of my Resolution, during the Budget session of the Parliament and in the light of the fact that the Parliament is not being deprived of an opportunity to have further discussion in the light of the "Discussion Paper", I wish to withdraw the Resolution.

The Resolution was, by leave, withdrawn.

Special financial and other assistance for developing Sikkim as an international tourist destination

SHRI O.T. LEPCHA (Sikkim): Sir, I beg to move the following Resolution:-

"Having regard to the fact that—

(i) Sikkim is one of the beautiful State of the country, full of natural and scenic beauty;

(ii) the third highest peak in the world Mt. Kanchenjunga in Sikkim;

(iii) Eighty-seven per cent of the State is under forest cover;

(iv) the State is full of different variety of flora and fauna;

(v) there is vast potential in the State for the development of a world class tourist destination;

(vi) it is a beautiful State attractive for tourists; and

(vii) for developing Sikkim as hot tourist destination there is a need for further development of the required infrastructure;

this House, therefore, urges upon the Government that special financial and other assistance may be given to the State of Sikkim for developing it as an international tourist destination and enhance the road, rail and air connectivity for the purpose."

Mr. Deputy Chairman, Sir, Sikkim, a small Himalayan State, joined the Indian Union as the 22nd State on 16th May, 1975. Located in the North East of India, Sikkim has international borders with Bhutan, China and Nepal and national border with Darjeeling district of India. It is one of the youngest Sates within the Indian Union. Sikkim's special constitutional status under article 371F makes it a unique State in terms of various traditional laws and institutional practices.

Located on the lap of Mount Kanchenjunga, the world's third highest mountain, the unparallel beauty of the State and very friendly and hospitable people are its competitive and comparative advantages. Sikkim is famous for its lush green vegetation, verdant forests, landscape dotted with perennial streams and waterfalls, scenic valleys and majestic mountains, and a range of rich and magnificent cultural heritage, all of which provide a safe haven for tourists for long. It also draws thousands of pilgrims to its holy shrines and monasteries. Indigenous architecture and the crime-free society added to the natural attractions of the State,

making it one of the most sought after tourist destination in the country. Tourism is an important sector for the prosperity of the nation and the State. The attention of planners, social reformers, politicians, cultural and academic scholars has been focused on the multi-dimensional growth of tourism sector and to make it one of the important industries in the world. It is one of the best and convenient platforms for educating people. Tourism provides an opportunity for cross-cultural communication and eliminates social barriers that impede progress towards understanding and harmony between people and the nation. It opens up new areas for promoting national integration and international understanding.

Tourism is one of the priorities and important sectors of the State and it has to become the main economy for the development of the State. It is non-polluting, low cost and high return oriented industry for the State subject to certain precautions. For this, the State has adopted integrated development for making tourism the most viable sector.

The State is nature-gifted and having all sorts of destinations and circuits required for the promotion of tourism sector. Sikkim offers impressive varieties of tourism products. Some of them are: organic green and pollution free State; very rich culture, traditions, heritage and strong commitment; eco-tourism and wildlife; village tourism; adventure tourism; wellness, health, yoga, herbal and medical tourism; religious, culture, heritage and pilgrimage tourism; tea tourism and hydro tourism; conference tourism and many more.

Majestic mountains, green valleys, wilderness and sense of adventure, ethnic cuisines, peaceful and crime free State, hotspot of biodiversity and a mixture of things that would make any place on the earth a delight to visit, has made Sikkim the most sought after destination for tourism that it should be. Virtually unexplored, offers unique opportunities in almost all the major aspects of tourism. We have lots of potential. जैसे आज दूसरे मुल्कों में तथा विश्व में प्रसिद्ध है जैसे स्विटजरलैंड है, विश्व में स्विटजरलैंड को पर्यटन के क्षेत्र में बहुत अच्छा माना जाता है। स्विटजरलैंड से कहीं ज्यादा पोटेंशल सिक्किम में है, जैसे सिक्किम का सरकार और वहां का प्रशासन और वहां के मुख्य मंत्री पूरे स्टेट को आर्गनिक बनाने के लिए चार साल पहले डिक्लेयर किया था। 2012 तक यह पूरा आर्गनिक स्टेट बन जाएगा। इस ओर देश के लिए एक बड़ा योगदान सिक्किम ने दिया है। सिक्किम 83 परसेंट फोरेस्ट कवर स्टेट है, इसको हंड्रेड परसेंट ग्रीन बोल सकते हैं, बाहर से देखने में पूरा ग्रीन दीखता है, केवल 17 परसेंट कल्टीवेटेड लैंड है। वहां पौल्यूशन नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। हम लोग वहां पौल्यूशन के विरोध में हैं और जो पौल्यूशन फैलाने वाली, धुंवा निकालने वाली इंडस्ट्रीज वहां आएंगी तो हम लोग उनको मना करते हैं। हम लोग पॉल्यूशन फैलाने वाली इंडस्ट्रीज़ को सिक्किम में नहीं लगा रहे हैं। सिक्किम क्राइम-फ्री स्टेट है, पीसफुल स्टेट है। उसको देखने के लिए, उसकी स्टडी करने के लिए, उसको एक्जामिन करने के लिए बहुत सारे विद्वान, वैज्ञानिक वहां जा सकते हैं।

सर, माउंट कंचनजंगा, जो संसार की तीसरी महान चोटी है। स्विटजरलैंड में सबसे ज्यादा ऊंचा करीब 23 हजार फीट ऊंचा माउंटेन है, लेकिन सिक्किम का माउंट कंचनजंगा 28208 फीट ऊंचा है, जो कि सिक्किम में चारों तरफ से दिखाई देता है। सर, हजारों की संख्या में विदेशी पर्यटक वहां पर आते हैं। मैं हाउस को इस साल के टूरिस्टस की जानकारी देना चाहता हूं कि डोमेस्टिक टूरिस्टस केवल 6 लाख आए और विदेशी टूरिस्टस करीब 34 हजार आए। सिक्किम को जाने वाला रास्ता डिस्टर्ब्ड है, अभी वहां पर जाने का

विकल्प नहीं है, उसकी एक ही लाइफ लाइन है, जो नेशनल हाईवे 31 है और उसमें भी गोरखालैंड वाले हम लोगों को डिस्टर्ब करते हैं। फिर भी, हम लोगों ने मेहनत करके टूरिज्म के क्षेत्र में बहुत काम किया है।

सर, वहां पर टोटल माउंटेन्स एंड पीक्स 28 हैं। ये सब बड़ी-बड़ी हैं, जैसे 19300 फीट से लेकर 28208 फीट तक की ऊंचाई के माउंटेन्स एंड पीक्स हैं और छोटे-छोटे माउंटेन्स बहुत ज्यादा हैं। सर, पर्यटकों के देखने के लिए वहां पर बहुत माउंटेन्स हैं। वहां पर Lakes and Wetland की संख्या 227 है और स्विटजरलैंड में केवल 100 हैं। अभी यहां पर क्लाइमेंट चेंज और ग्लोबल वार्मिंग की बात हो रही थी। अगर भविष्य में कहीं से अच्छी ऑक्सीजन मिलेगी, तो वह सिक्किम से मिलेगी, क्योंकि माउंट कंचनजंगा उधर है। वहां का वातावरण स्वच्छ है। सर, वहां पर 21 ग्लेशियर हैं और सिक्किम में केवल 9 ग्लेशियर हैं। मैं इसको स्विटजरलैंड से इसलिए कम्पेयर कर रहा हूं, क्योंकि हमारे लोग सोचते हैं कि स्विटजरलैंड को देखने के लिए चले जायें, घूमने के लिए चले जायें, स्विटजरलैंड अच्छा है। लेकिन अपने हिन्दुस्तान में सबसे छोटा प्रदेश सिक्किम, स्विटजरलैंड से कई गुणा ज्यादा अच्छा है, सुंदर है। अपने देश को कोई याद नहीं करता है, इसलिए मैं सिक्किम को थोड़ा स्विटजरलैंड के साथ कम्पेयर करके बता रहा हूं। सर, टूरिज्म में जो spa का प्रचलन है, लेकिन सिक्किम में original spa है hot spring, वहां पर टोटल 9 hot springs हैं। अगर इसके लिए गवर्नमेंट से हमें थोड़ी मदद मिलेगी, तो spa बनाने की जरूरत नहीं है। सर, मैं रिकॉर्ड के लिए बताना चाहता हूं कि वहां पर बहुत सी प्रजातियां हैं। वहां पर 150 mammals हैं, Birds की 552 वैराइटीज़ हैं। सर, वहां पर बटरफ्लाईज़ की 690 वैराइटीज़ हैं। सर, दूसरी जगहों पर इनको चिड़ियाघर में घर बनाकर रखना पड़ता है, लेकिन सिक्किम में इसकी जरूरत नहीं है। वे सब जंगल में खाते-पीते हैं और घूमते हैं। सर, वहां पर हिल फिश की 48 वैराइटीज़ हैं। वहां पर flowering plants की 4500 वैराइटीज़ हैं, यह फूलने वाला प्लांट है। जो Rhododendrons है, इसको grass बोलते हैं, Rhododendrons यह एक plants है, जो फूलता भी है, इसको हम लोगों ने State plants डिक्लेयर किया है। यह वर्ल्ड में कहीं नहीं है। इसकी 36 वैराइटीज़ सिक्किम में हैं। वहां पर Medicinal plants 426 हैं, वहां पर कैंसर की मेडिसन भी मिलती है। मैं जब यहां हाउस में आया तो इधर से बहुत बड़े-बड़े लोग आए और बोले की आपकी स्टेट में कैंसर की मेडिसन मिलती है, हमें वहां ले चलो। हमारे यहां यह बैन है, हमें अपनी स्टेट से बाहर कुछ ले जाने की अनुमति नहीं है। सर, कैंसर की मेडिसन सिक्किम में मिलती है और ferns टोटल 362 है। साईंस के स्टूडेंट, बोटनी के स्टूडेंट की स्टडी के लिए वहां यह चीज़ है और tree ferns है। जो प्रिमुला फ्लावर है, उसके लिए माली की जरूरत नहीं है, वह अपने आप माउंटेन में, फारेस्ट में धरती से निकलता है। इस प्रकार से ये टोटल 60 वैराइटीज़ हैं। Then, we are very rich in the varieties of orchids in the whole world, which are 556. There are 104 varieties of 'river and stream'. इस प्रकार से सिक्किम को प्रकृति ने सब कुछ दिया है। सिक्किम सरकार बहुत कोशिश कर रही है और मैं आज केन्द्र सरकार को भी धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं धन्यवाद देना चाहता हूं, देश के प्रधान मंत्री को, सोनिया मैडम को और टूरिज्म डिपार्टमेंट के मंत्री महोदय को इन लोगों ने टूरिज्म क्षेत्र में आगे जाने के लिए हमारी बहुत मदद की है। हम लोग भी यह चाहते हैं कि सिक्किम वर्ल्ड में एक बेहतरीन टूरिज्म डेस्टीनेशन बने। हम सिक्किम को स्विटजरलैंड से भी अच्छा बनाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी स्टेट में कोई कमी नहीं है। हमारे यहां पावर surplus है और हम 2012 से दूसरी स्टेटों को पावर देंगे। We have a potential of 8000 mw in hydel power. अभी साढ़े छः हजार पर काम हो रहा है। हमारे यहां पर पावर कम खर्च होती है, इसीलिए हम दूसरी स्टेट्स को पावर दे सकते हैं। ड्रिंकिंग वाटर के मामले में 95 परसेंट गांव कवर हैं और सेनिटेशन में 100 परसेंट हैं। हम लोग लास्ट ईयर 'ग्राम निर्मल एवार्ड' महामहिम राष्ट्रपति जी के हाथों से ले चुके हैं। हमारी स्टेट plastic-banned स्टेट है। सिक्किम में प्लास्टिक का कोई भी समान यूज करने पर पाबंदी है और इसी तरह से grazing banned है और वहां grazing नहीं चलती है। वर्ल्ड लाइफ एक्ट भी बना हुआ है। वहां पर

किसी भी एनिमल को या चिड़िया को मारने पर आदमी मारने से भी ज्यादा कड़ा कानून है। वहां पर ड्रग्स, सुपारी और रजनीगंधा सब चीजें बैन्ड हैं। हम सभी चीजें टूरिज्म के माध्यम से देख रहे हैं। जो हमारा ट्रांसपोर्ट और कम्युनिकेशन है, वह हमें अभी और दो-तीन साल तक झेलना पड़ेगा, क्योंकि सिविल एविएशन ने कहा है कि वह 2012 में एयरपोर्ट कम्पलीट करेगा। वैसे एयर पोर्ट के निर्माण का काम चल रहा है। ममता मैडम वहां पर लास्ट ईयर गई थीं और रेलवे स्टेशन के फाउंडेशन का स्टोन लगाया है। इस तरह से एक अल्टरनेटिव नेशनल हाईवे भी वाया भूटान होते हुए इन प्रिंसिपल सैंक्शन हुआ है। इस रिजोलूशन को लाने का मेरा यही उद्देश्य है कि सारे भारत के लोग सिक्किम को देखें। यह प्रदेश अपने देश में दूसरे मूल्कों से अच्छा, छोटा सा प्रदेश है और अच्छा है। आप इसको प्रोत्साहन दें। भारत सरकार चाहे तो सिक्किम को विश्व का एक बेहतरीन पर्यटन स्थल बना सकती है। इसीलिए मैं केन्द्र सरकार से तथा पर्यटन मंत्रालय से रिक्वेस्ट करना चाहता हूं कि हमारे प्रदेश को ज्यादा फाइनेंशियल एसिस्टेंस तथा टूरिज्म के मामले में मदद दें। इसी के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

The question was proposed.

श्री एस.एस. अहलुवालिया (झारखंड): उपसभापति महोदय, हमारे साथ ओ.टी. लेपचा जी ने अपने प्रदेश की मदद के लिए एक संकल्प सदन के सामने रखा है और संकल्प को रखते वक्त उन्होंने जो बातें सिक्किम प्रदेश के बारे में बताईं, ये बातें बहुत से लोगों को पता नहीं हैं। यह जानकारी नहीं होना भी एक कारण है कि भारतीय पर्यटक वहां पहुंच नहीं सका। पर, जिस राज्य की उम्र सिर्फ पैंतीस वर्ष है, वह भारतीय गणराज्य में सिर्फ पैंतीस वर्ष का युवक है, यह पैंतीस वर्ष का युवक राज्य अपने राज्य की संपदा को बचाने के लिए जो कदम उठा रहा है, वे कदम सराहनीय हैं। वैसे तो इनको परम् पिता परमेश्वर ने ही इतना कुछ दिया है कि लेपचा, जो यहां के वासी हैं, वे इसको ले मेयल, अर्थात् स्वर्ग मानते हैं, भूटिया इसको डेंग्मुल देमाजोंग्स अर्थात् the Hidden valley of rice मानते हैं, हिंदू धर्म शास्त्र इसको इंद्राकिल अर्थात् भगवान इंद्र का गार्डन, उसके बगीचे के रूप में मानते हैं। कितना सुंदर हो सकता है वह Garden of Indra, कितना सुंदर हो सकता है लेपचा की कल्पना में वहां का स्वर्ग और कितना सुंदर हो सकता है भूटिया की कल्पना में वहां की Hidden valley of rice? यह समझने की बात है कि जहां कंचनजंगा की चोटी है, जहां जब पूर्व में सूरज उगता है तो वह प्रथम किरण को चूमती है और जहां वे ग्लेशियर चांदी के बहते हुए झरने जैसे लगते हैं, उस खूबसूरती को कायम रखने के लिए वहां की सरकार ने जो कदम उठाए हैं, उसको plastic-free बनाना, organic farming के लिए जाना, केमिकल का यूज नहीं होने देना, smoke या industry को डेवलप नहीं होना देना आदि, एक तरफ तो अपनी प्राकृतिक सुंदरता को बचाने की तरफ अच्छे कदम हैं, पर दूसरी तरफ अपनी जनता को उद्योग में नौकरी नहीं मिलने के लिए उनको डिप्राइव करने की तरफ भी कदम उठते हैं। वे डिप्राइव न हों, उनसे उनको तकलीफ न हो, उनको रोजगार के इंतजाम मिल सकें, इसलिए वे उसको विश्व का एक उच्च कोटि का पर्यटक स्थल बनाना चाहते हैं, इसलिए वह कल्पना लेकर, वह संकल्प लेकर हमारे मित्र श्री ओ.टी. लेपचा जी सदन में आए हैं और मैं इसका भरपूर समर्थन करता हूं। मैं कहता हूं कि ये जो ग्लेशियर की बात करते हैं, तो मैं बताता हूं कि मैं सिख संप्रदाय से आता हूं, हमारे प्रथम गुरू वहां गए थे, इनके यहां पर एक ग्लेशियर है, उसका नाम गुरू डांग मार्ग चौ है। पवन जी, आप समझिए, गुरू डांग मार्ग, अर्थात् जहां गुरू ने डांग मारी हो, चौ, चौ मतलब पानी का रिजर्व वॉयर। जब गुरू वहां से गुजर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि बहुत दूर-दूर तक लोग पानी के लिए जाते हैं। उन्हें पीने के लिए पानी नहीं मिलता है, बर्फ जमी हुई है, तब उन्होंने बर्फ को अपनी लाठी से, जिस लाठी को लेकर वे चलते थे, उस डांग से बर्फ को तोड़ा। जब तोड़ा, तो ग्लेशियर के ऊपर का हिस्सा खुल गया और उसके नीचे पानी था। वहां आज भी पानी है। यह साढ़े सत्रह फीट की ऊंचाई पर है और आज भी गुरू डांग मार्ग चौ में पानी जमता नहीं है। यहां तक की अर्मी की जो गाड़ियां जाती हैं, ट्रक जाते हैं, जीप तथा दूसरे वेहिकल्स जाते हैं, उनको अपने रेडिएटर के लिए ऐसा पानी चाहिए होता है, जो बर्फ में जम न जाए। वे उस पानी का भी प्रयोग करते हैं और वह पीने के काम तो आता ही है। यही कारण है कि जब

वहाँ गुरू नानक गए, तो उनको 'नानक लामा' के नाम पर जाना गया और आज भी वहाँ गौतम बुद्ध के incarnation के रूप में ही 'नानक लामा' के नाम पर उनकी बड़ी-बड़ी तस्वीरें लगा कर रखी हुई हैं।

यह एक प्राकृतिक सौंदर्य से भरा हुआ राज्य है। उनकी सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि वे उद्योग नहीं लगा सकते, क्योंकि 87 फीसदी इलाका reserve forest है। उसको भी protect करना है। उसके बाद उनके पास इतने तरह के flowers हैं, मेरे ख्याल से सिक्किम पहला राज्य था, जिसने daffodils export करने शुरू किए और अच्छे flowers export करने शुरू किए। सर, वहाँ पर अद्भुत medicinal plants हैं, जो और दूसरी जगह कहीं नहीं मिलते। उन्होंने सिर्फ उन्हें बचा कर ही नहीं रखा है, बल्कि उन पर अनुसंधान करके उनकी पहचान बना कर रखी है। उनका दुरुपयोग न हो, उनकी smuggling न हो, इसके लिए कानून भी बनाया है और इस पर भी रोक लगा रखी है कि अगर उस medicinal plant के बारे में ज्ञान अर्जन करना है, तो सिक्किम जाना पड़ेगा। करीब 5.5-6 लाख आबादी है। कम आबादी में रह कर इतने बड़े इलाके को उन्होंने बचा कर रखा हुआ है। तत्कालीन राजा ने इसको संजो कर रखा, बचा कर रखा। नेपाल से बचाया, चीन से बचाया, ब्रिटिश साम्राज्यवाद से बचाया। हर तरह से बचा कर बहुत दिनों तक रखा और अंततः यह 16 मुई, 1975 को भारत का 22वां राज्य बना।

महोदय, इनकी सबसे बड़ी प्रॉब्लम है - infrastructure. ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने दार्जिलिंग को hill queen बनाने के लिए रेल दिया, sanitorium बनाने के लिए वहाँ पर infrastructure develop किया। जैसे उसने दार्जिलिंग को develop किया, वैसे ही उसने साउथ में ऊटी को develop किया, इधर नैनीताल को develop किया, मसूरी को develop किया, देहरादून को develop किया, शिमला को develop किया, डलहौजी को develop किया, किन्तु गंगटोक को develop नहीं किया। उन्होंने गंगटोक को develop इसलिए नहीं किया, क्योंकि इसके राजा अपने मन के मौजी थे। उनका अपनी धरोहर किसी को समर्पण करने का इरादा नहीं था। वे अपने गौरव के साथ सम्मानित रूप से जिन्दा रहना चाहते थे और अपनी प्रजा को सुखी रखना चाहते थे। इसलिए उन्होंने किसी के पास जल्दी surrender नहीं किया। यही कारण है कि वहाँ सिर्फ एक रास्ता है, सिर्फ एक रोड है, जिसका उल्लेख उन्होंने किया। National Highway No. 31 is the only road connecting Gangtok. गोरखालैंड के आन्दोलन के कारण, कभी-कभी सिलीगुड़ी में आंदोलन के कारण, कभी-कभी बंद के कारण वह रास्ता बंद हो जाता है। वह रास्ता बंद हो जाने के कारण उनके यहाँ नमक से लेकर, तेल से लेकर, गैस से लेकर सब कुछ जाना बंद हो जाता है। तकलीफ होने के बावजूद भी वे अच्छी तरह रह रहे हैं। उन्होंने अच्छा परिवेश रखा हुआ है। क्योंकि वहाँ के लोग अच्छे हैं, उनकी अपनी सोच अच्छी है और उन्होंने उसी तरह से अपने आपको तैयार किया हुआ है। भोले लोग हैं।

महोदय, यह Organic State है। आज सारी दुनिया में industrial revolution के साथ-साथ population बढ़ी। Population बढ़ी, तो रोजगार चाहिए, रोजगार चाहिए, तो industrial revolution आया industrial revolution आया, तो खेतों में उपज भी ज्यादा चाहिए, क्योंकि खाने वालों के मुँह ज्यादा हो गए। अगर अनाज भी ज्यादा पैदा करना है, तो inorganic खाद डाल कर, फर्टिलाइजर डाल कर हमने पैदावार बढ़ाई। किन्तु उन्होंने अभी तक organic पैदावार ही रखी और अब 100 परसेंट organic कर दिया है। आज भी आप विश्व के किसी बाजार में चले जाइए, तो आपको फल की दुकान पर, चाय की दुकान पर, herbals की दुकान पर या सब्जी की दुकान पर दो तरह के stall लगे हुए मिलेंगे। एक मिलेगा inorganic खाद का और दूसरा मिलेगा organic खाद का। ऑर्गेनिक खाद की उपज की कीमत ज्यादा है और इनऑर्गेनिक की कम है। ऑर्गेनिक खाद से ही ये सब कुछ कर रहे हैं और यही परम्परा हमें दूसरे राज्यों में भी अपनानी चाहिए, किन्तु हमारे यहां जैनेटिकली मॉडिफाइड सीड्स आ रहे हैं। हमारी जो धरोहर है, हमारी जो पहचान है, वह हमारे चावल हैं, गेहूं है, सरसों के बीज हैं, सूरजमुखी के बीज हैं अथवा दूसरे बीज हैं, जो पता नहीं सैकड़ों वर्षों से हमारे साथ चले आ रहे थे और परिवार की धरोहर बने हुए थे, आज वे सारे खत्म हो रहे हैं। भूटिया लोग कहते थे कि यह वैली

ऑफ राइस है, उस वैली ऑफ राइस को बचाने का एक ही रास्ता है। किसान जब खेती करता है तो उसका एक हिस्सा अगले साल बीज में लगाने के लिए रख देता है और बाकी हिस्से को कंज्यूम कर लेता है, पर वह परम्पराएं आज भारत के बाकी हिस्सों में खत्म होती जा रही हैं। सारी मुसीबतों को झेलने के बावजूद भी आप स्वयं यह कठोर कदम उठा रहे हैं, यह सराहनीय है।

मेरा मानना है कि इन्होंने जो मांग की है, इनकी मांग सरकार द्वारा जरूर पूरी की जानी चाहिए। वहां टूरिज्म डेवलपमेंट के लिए आप जो भी इकोनॉमिक पैकेज दे सकें, देना चाहिए। ऐसा सिर्फ सिक्किम के साथ ही नहीं, जितने भी पहाड़ी राज्य हैं, चाहे नागालैंड हो, मिज़ोरम हो, मेघालय हो, हिमाचल प्रदेश हो या कोई और इलाका हो, उन सभी स्थानों को देना चाहिए। हिमाचल में कई जगह ऐसी हैं कि वाकई उनकी तुलना स्विटज़रलैंड से की जा सकती है। ऐसे ही इलाके उत्तराखंड और कश्मीर में भी हैं, हमारे भारत में हर जगह फैले हुए हैं, जैसे ऊटी है। ऐसे इलाकों के डेवलपमेंट के लिए सरकार की एक योजना बननी चाहिए, ताकि इन इलाकों में प्रकृति को धुएं और कार्बन से बचाया जा सके। प्रकृति को बचा कर हम प्राकृतिक सम्पदा को बढ़ा सकें और उससे कुछ कमा सकें।

आपने अभी तितलियों की बात की, तितलियां हैं, किन्तु उनको बचाने के लिए आप मोबाइल टावर मत लगने दीजिएगा। अगर आपके सिक्किम में मोबाइल टावर लग जाएंगे, तो तितलियां रास्ता भूल जाएंगी, वे घर नहीं पहुंच सकेंगी और आहिस्ता-आहिस्ता मर जाएंगी, जैसे यहां पर हुआ है। मोबाइल टावर्स के कारण तितलियां खत्म हो गईं, भंवरे खत्म हो गए, मधुमक्खियां खत्म हो गईं। विकास की गति किसी के लिए मौत का अंजाम बन जाती है। हमें ऐसा सोच कर ही कोई कदम उठाना चाहिए कि अगर विकास किसी भी जीव अथवा प्रकृति की मौत का अंजाम बने, ऐसा विकास राष्ट्र को नहीं चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि केवल पेट भरने के लिए ही हम इसको आगे बढ़ाएं। यह सही है कि पर्यटन से रोज़गार पैदा होता है। अगर एक पर्यटक किसी राज्य में जाता है, तो उसके साथ-साथ बहुत सारी चीज़ें जुड़ती हैं और बहुत सारे लोगों को रोजगार मिलता है।

अंत में एक बात सिक्किम के बारे में जरूर रखना चाहूंगा, जिसे पहले भी मैं इस सदन में रख चुका हूं। सिक्किम में करीब 400 ऐसे परिवार हैं, जो राजा के वक्त के हैं, वे व्यापारी लोग हैं। उनमें राजस्थान के रहने वाले लोग हैं, उत्तर प्रदेश के रहने वाले लोग हैं, बिहार के रहने वाले लोग हैं और बंगाल के रहने वाले हैं। वहां पर वे व्यापार करने के लिए गए थे, किन्तु जिस वक्त राजा की ओर से सब्जेक्ट मैटर का रजिस्टर बनाया गया, उस वक्त उनका नाम नहीं लिखा गया या हो सकता है कि उन्होंने लिखवाने से इंकार कर दिया। कुछ भी हुआ हो, लेकिन उनका नाम उस रजिस्टर में नहीं लिखा गया, इसलिए आज वे सब्जैक्ट मैटर नहीं कहलाते हैं। हमारा फाइनांस डिपार्टमेंट एक टैक्स एग्ज़म्पशन का प्रोवीज़न देता है और कहता है कि जो सिटिज़न हैं, जिनका नाम सब्जैक्ट मैटर के रजिस्टर में लिखा हुआ है, उनको ही इन्कम टैक्स का एग्ज़म्पशन मिलेगा, दूसरों को नहीं मिलेगा। ये लोग, जो राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल से हैं, सभी व्यापार करते हैं। इनमे से कोई वहां नौकरियों में हिस्सा नहीं मांगता अथवा खेत-खलिहान में हिस्सा नहीं मांगता, वे सभी व्यापारी हैं, लेकिन वे वहां के लोकलाइट्स के साथ कंपीट नहीं कर सकते, क्योंकि एक तो टैक्स पे करता है और दूसरा टैक्स पे नहीं करता है। जब पी. चिदम्बरम साहब वित्त मंत्री थे, उस समय भी मैंने भारत सरकार से मांग की थी वह इसमें संशोधन लाए, लेकिन उस वक्त उन्होंने यह लागू कर दिया था। कई बार मैंने उनसे कहा कि वह उसको विड्रॉ कर लें, केवल 400 परिवारों की ही बात है। इसमें एक यूनिफॉर्मिटी होनी चाहिए क्योंकि वे भी भारतवासी हैं और ये भी भारतवासी हैं, सिक्किम भारत का ही अंग है। सबको समान अधिकार मिलेगा, तभी हम सब मिल-जुल कर पनप सकते हैं और सिक्किम को वाकई स्विटज़रलैंड के बराबर का पर्यटन स्थल बना सकते हैं। इतना कहते हुए मैं इस बिल का समर्थन करता हूं। धन्यवाद।

4.00 P.M.

श्री मुकुट मिथी (अरुणाचल प्रदेश): उपसभापति महोदय, हमारे देश में हिमालय की गोद में बसे हुए पाँच प्रदेश है, जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश। इनमें से सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश ईस्टर्न हिमालय में बसे हुए हैं। इसके साथ-साथ, हमारा जो नॉर्थ-ईस्ट है, उसमें आठ बहनें हैं। पहले इन्हें seven sisters कहते थे, लेकिन 1975 में सिक्किम का induction होने के बाद और फिर उसके नॉर्थ-ईस्ट काउंसिल में दाखिल होने के बाद ये सात से आठ हो गये।

हमारे लेपचा जी ने जो रिजोलुशन इस सदन में पेश किया है, मैं उसका पूरा-पूरा समर्थन करता हूँ। यह बहुत जरूरी है कि देश में टूरिज्म के विकास के लिए और सिक्किम को वर्ल्ड क्लास टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनाने के लिए देश और नॉर्थ-ईस्ट के साथ-साथ सेंट्रल गवर्नमेंट को भी सिक्किम को पूरा समर्थन देना चाहिए, तभी वहाँ पर्यटक आएँगे। पर्यटक, विशेषकर फॉरेन टूरिस्ट्स वहीं जाएँगे, जहाँ accessibility और physical infrastructure हो। उसके लिए कॉमर्शियल एयरपोर्ट्स होने चाहिए, रेलवे स्टेशंस होने चाहिए, रेल की लाइनें होनी चाहिए और सड़कें अच्छी होनी चाहिए। अभी अहलुवालिया साहब ने कहा कि सिक्किम या गंगटोक पहुँचने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता है। हमारे लिए यह बहुत खुशी की बात है कि भारत सरकार ने विशेषकर सिक्किम के लोगों के लिए रेलवे स्टेशन बनाने का काम शुरू किया है और वहाँ के लिए एक एयरपोर्ट भी सैंक्शन किया है, लेकिन उसके काम की जो रफ्तार है, वह बहुत धीमी है। इसलिए मैं आपके माध्यम से प्लानिंग मिनिस्टर से यह रिक्वेस्ट करना चाहूँगा कि वहाँ जो एजेंसीज़ काम कर रही हैं, उनको पर्याप्त धनराशि मिले, ताकि वहाँ जो एयरपोर्ट्स और रोड्स बनने चाहिए, उनका काम जल्दी से जल्दी पूरा हो।

जब हम टूरिज्म की बात करते हैं तो हम पाते हैं कि हमारा देश उसमें unfortunately बहुत पीछे है। जब हम यूरोपियन देशों, जैसे स्विट्जरलैंड, आस्ट्रिया या अन्य देशों से अपने आपको compare करते हैं, यूरोप और अमेरिका की बात तो बहुत दूर है, हमारे आस-पास साउथ एशिया के जो देश, थाइलैंड और मलेशिया हैं, वहाँ फॉरेन टूरिस्ट्स का जो inflow है, वह भारत में फॉरेन टूरिस्ट्स के मुकाबले बहुत ज्यादा है। अभी मलेशिया में 2 करोड़ से ऊपर foreign tourists जाते हैं, जब कि भारत में 50 लाख से ऊपर विदेशी सौलानी आते हैं। इससे हम जान सकते हैं कि हम टूरिज्म के मामले में बहुत पीछे हैं। इसलिए भारत के टूरिज्म को आगे ले जाना बहुत जरूरी है। जब हम economic advancement की बात करते हैं, जब हम अपने आपको चीन के साथ या US economy के साथ compare करने लगते हैं, तो उसके साथ-साथ जो हमारी industrial growth है या physical growth है **...(व्यवधान)...**

[THE VICE-CHAIRMAN (PROF. SAIF-UD-DIN-SOZ) IN THE CHAIR]

उपसभाध्यक्ष महोदय, जैसा मैंने बताया है कि बाहर के देशों के मुकाबले में हम बहुत पीछे हैं। जब हम present growth की बात करते हैं या आने वाली growth की बात करते हैं, तो उसमें tourism को शामिल करना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए development of tourism infrastructure बहुत ज़रूरी है। इसलिए मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से दरख्वास्त करूंगा कि भारत सरकार के अंतर्गत एक Multi Ministerial Integrated Committee बने जिसमें टूरिज्म मिनिस्ट्री, प्लानिंग डिपार्टमेंट, Ministry of Civil Aviation, National Highway Authority आदि शामिल हों और भारत की टूरिज्म पॉलिसी और टूरिस्ट सर्किट बनाने के साथ-साथ हमारे नॉर्थ-ईस्ट - विशेषकर सिक्किम तथा नॉर्थ-ईस्ट की जो 7 स्टेट्स हैं, उनके लिए एक अच्छी पॉलिसी बने और इसको implement करने के लिए जितनी धनराशि की दरकार हो, वह उनको प्रदान की जाए।

उपसभाध्यक्ष जी, हम टूरिज्म को बहुत दिशाओं में बढ़ा सकते हैं और बहुत से टूरिस्ट्स attract कर सकते हैं। हमारे इतिहास को लेकर हम टूरिस्ट्स को attract कर सकते हैं। जैसा अभी अहलुवालिया जी ने और लेपचा जी ने कहा कि हमारे हिमालय की जो सुदंरता है, कश्मीर की जो सुंदरता है, ऊंचे पहाड़ हैं, नदियां

हैं, White River Rafting है, इसके कारण हमारे यहां adventurous tourism हो सकता है। नॉर्थ-ईस्ट का जो unique culture है, उसके कारण भी हम बहुत से tourists को attract कर सकते हैं। मैं भारत सरकार को और विशेषकर टूरिज्म मिनिस्ट्री को यह चेतावनी देना चाहूंगा कि जो टूरिज्म डेवलपमेंट हमारे नॉर्थ-ईस्ट में हो रहा है या भारत के अन्य भागों में हो रहा है, वह काफी नहीं है। जो स्कीम्स development of tourism infrastructure के लिए यानी होटल, रेस्टोरेंट, accommodation के लिए मिनिस्ट्री में भेजी जाती हैं, हमने देखा है कि वे middlemen के माध्यम से implement की जाती हैं। हमें इससे छुटकारा पाना होगा। यह जो haphazard way में स्कीम्स बन रही हैं, जिस तरह से टूरिज्म मिनिस्ट्री इन चीजों को बिना देखे और बिना समझे पास कर देती है, यह ठीक नहीं है। स्टेट गवर्नमेंट किसी pressure की वजह से development of tourism infrastructure के लिए यहां कोई स्कीम भेज सकती है। लेकिन, ऐसी स्कीम्स भेजने से कोई फायदा नहीं होगा, जिनका tourism के साथ कोई ताल्लुक नहीं है। ऐसी स्कीम्स को जो लोग recommend करा कर लाते हैं या जो middle man हैं या जो contractors हैं, वे इससे फायदा उठाने के लिए, अपनी जेब भरने के लिए ऐसा करते हैं। हमें ऐसी स्कीमें avoid करनी चाहिए। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि टूरिस्ट सर्किट बने, स्टेट गवर्नमेंट और सेन्ट्रल गवर्नमेंट एक साथ बैठ कर यह तय करें कि सिक्किम में क्या-क्या infrastructures लाने चाहिए और अरुणाचल प्रदेश, असम और नागालैंड में कहां-कहां खर्च होना चाहिए, तभी जाकर हमारा tourism successful होगा।

हमने देखा है कि थाईलैंड में एक छोटी सी नदी है, जिसका नाम river Kwai है। सेकण्ड वर्ल्ड वार में जापान ने river Kwai पर एक छोटा सा ब्रिज बनाया। उसने वह ब्रिज इसलिए बनाया था, क्योंकि वह उस पर ट्रेन चला कर अपनी आर्मी को बर्मा ले जाना चाहता था। उस ब्रिज के construction के लिए जो British Prisoners of War थे, उनको लगाया गया था। उनमें चीनी और ब्रिटिश थे। आज भी वहां river Kwai और उस पर बने ब्रिज को देखने के लिए लाखों लोग जाते हैं। सेकण्ड वर्ल्ड वार में नागालैंड में, जहां पर जापान और हमारे बीच वार हुआ था, वहां पर एक Kohima Epitaph है। यह Epitaph वर्ल्ड का बहुत सुंदर और popular epitaph है, जिस पर लिखा हुआ है, □When you go home, tell them that for their tomorrow, we gave our today□. मैंने इसको कोहिमा में नहीं देखा, बल्कि मैंने इसको लंदन में देखा, जब लंदन में वेस्टमिन्स्टर के सामने, जो वार में शहीद हुए, उनके साथी या उनके relatives मोमबत्ती जला कर श्रद्धांजलि देने आते थे, वहां पर कोरियन वार के epitaph, सेकण्ड वर्ल्ड वार के epitaph और भी बहुत सारे epitaph लगे हुए थे, उनमें कोहिमा का भी एक epitaph था। नागालैंड की capital कोहिमा बहुत सुंदर जगह है, वहां थोड़ी बहुत security problem हो सकती है।

1962 में अरुणाचल प्रदेश के दो जगह से चीन ने हमारे ऊपर आक्रमण किया था। उनमें से एक का नाम वालोंग है, जिसको वालोंग बैटल कहा जाता है और दूसरी जगह का नाम तवांग है, जिसको तवांग बैटल कहा जाता है। इन दोनों जगहों का इतिहास से संबंध है। इतिहास के साथ-साथ वहां प्राकृतिक सौन्दर्य भी है, जो देखने लायक है। मैं सिर्फ सिक्किम, असम और अरुणाचल के बारे में नहीं कहना चाहता हूँ, बल्कि ऐसी जगहों में, जहां tourist attraction है, पूरे नॉर्थ ईस्ट के लिए एक पैकेज बनाना चाहिए। मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ। कि आप सारे शहरों को tourist destination बना दीजिए या सारे गांवों को tourist destination बना दीजिए।

जहां नक्सलाइट की problem है या नॉर्थ ईस्ट में, जहां security problem हो रही है, यह problem basically unemployed youth के कारण है। चूंकि उनके पास कोई काम नहीं है, इसलिए उनको attract करके उन्हें इस काम में शामिल किया जाता है, जो देश के विरुद्ध है। वहां इंडस्ट्री immediately नहीं आ सकती है, क्योंकि industrial product की मार्केटिंग के लिए जो consumer मार्केट है, वह इतनी दूर है कि इंडस्ट्री लगाने से उतना फायदा नहीं होगा। सिर्फ यहीं फायदा हो सकता है, जो service sector है, जो

tourism industry है। इस tourism industry को अगर हम importance दें, तभी जाकर हमारे नॉर्थ-ईस्ट में जो प्रॉब्लम्स चल रही हैं, उनसे निपटने में हम कामयाब हो सकते हैं।

सर, दूसरी बात यह है कि कश्मीर में इतनी सुंदरता के बावजूद वहां क्या प्रॉब्लम है? वहां की प्रॉब्लम आप अच्छी तरह से जानते हैं, मैं आपको उसका विवरण नहीं देना चाहूंगा, वह प्रॉब्लम तो बाहर से आती है। जो भी हो, हमारी हिमालयन स्टेट्स, हमारे नॉर्थ-ईस्ट की ओर विशेष ध्यान दिया जाए, इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कहना चाहूंगा। आपके माध्यम से मैं मंत्री जी, जो सदन में टूरिज्म को भी represent कर रहे हैं और खुद प्लानिंग मिनिस्टर भी हैं, तो मैं उनसे दरख्वास्त करता हूं कि यह जो resolution लाया गया है, इसके साथ-साथ सारे हिमालय और नॉर्थ-ईस्ट के लिए एक सुंदर सा पैकेज बनाएं, वहां के लिए ऐसा mechanism हो जिससे tourism development को बल मिले, धन्यवाद।

डा. अखिलेश दास गुप्ता (उत्तर प्रदेश): मान्यवर, आज से 35 वर्ष पूर्व जब मई, 1975 में हम लोग स्कूल में थे, मुझे याद है, जब यह खबर आई कि सिक्किम भारत का एक हिस्सा बन गया है तो पूरे स्कूल में एक खुशी की लहर छा गई थी, स्कूल के सारे बच्चे झूम उठे थे और पूरे देश में एक खुशहाली का वातावरण बन गया था कि सिक्किम जैसा महत्वपूर्ण प्रदेश हमारे भारत का अंग बना है। सिक्किम का हमेशा से ही एक विशेष महत्व रहा है। जब वह भारत के गणराज्य में शामिल नहीं था, तब भी हम लोग सिक्किम के बारे में, वहां की खूबसूरती के बारे में कल्पना किया करते थे और जब वह भारत का पार्ट बना तो हम लोग सोचा करते थे कि हम जब बड़े होंगे तो बार-बार सिक्किम जाएंगे। आज खुशी की बात है कि सिक्किम दिनों-दिन बहुत तरक्की कर रहा है। सिक्किम में बहुत जागरूक लोग हैं, वहां चार-पांच लाख लोगों की जनसंख्या है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि श्री ओ.टी. लेपचा जी ने यह resolution रखा है। मैं समझता हूं कि सिक्किम 35 वर्ष पुराना राज्य है, जो कि सबसे युवा प्रदेश है, जैसा कि अहलुवालिया जी कह रहे थे और हमारे लेपचा जी भी इस राज्य सभा के सबसे युवा सांसद हैं। जो प्रस्ताव उन्होंने रखा है, इसकी प्रशंसा करनी चाहिए और मैं समझता हूं कि इस सदन के अंदर कोई भी सदस्य ऐसा नहीं है, जो यह नहीं चाहता हो कि सिक्किम इस देश का बहुत ही महत्वपूर्ण प्रदेश बने। सिक्किम में वे सारी संभावनाएं हैं जो उसे विश्व के किसी भी tourist centre से बेहतर बनाने में हो सकती हैं। आज मैं इस बात की भी तारीफ करूंगा कि सिक्किम के लोगों ने, वहां की सरकार ने इस बात का प्रयास किया कि पहले दिन से उनकी नज़र इस बात पर रही कि हम सिक्किम को विश्व के मानचित्र पर एक tourist development centre के रूप में develop करें। इसके लिए उन्होंने वहां कोई ऐसी-वैसी इंडस्ट्री नहीं लाने दी जिससे कि वहां का वातावरण खराब हो सके, यद्यपि वहां की संभावना है और वहां कुछ hydro projects की संभावना है और वहां कुछ Hydro Power Projects हैं भी।

मान्यवर, कई बार बहुत सारे प्रदेशों में डिमांड उठी कि जो tourists आते हैं, उनके entertainment के लिए वहां कुछ होना चाहिए और सिक्किम हिन्दुस्तान का ऐसा प्रदेश है जिसने वहां casino खुले-आम open कर रखा है और वहां पर कई casinos हैं। बड़ी संख्या में tourists वहां जा रहे हैं, लेकिन जो बेसिक समस्या है, जब अंतर्राष्ट्रीय टूरिस्ट्स की बात हम करते हैं तो infrastructure के बिना यह आसान नहीं है कि कोई यूरिस्ट हमारे यहां आए और अब तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दुस्तान का जो टूरिस्ट है, उसकी भी इतनी बड़ी संख्या हो गई है। मुझे याद है, 1999 में मैंने Barcelona से Royal Caribbean Cruise लिया था और उस tour में हम सिर्फ 4 Indian families थीं। करीब ढाई-तीन हज़ार travellers थे और इनमें से कुल 4 Indian families थीं, हम 12 लोग थे। बाद में शिप के कैप्टन ने जब डिनर होस्ट किया तो एक-एक कंट्री के बारे में बताया, जिसमें उसने बताया कि इस कंट्री के इतने लोग आए हैं, इस कंट्री के इतने आए हैं और जब इंडिया का नाम आया कि 12 लोग आए हैं, तो सारे टूरिस्ट्स ने तालियां बजाईं कि अब हिन्दुस्तानी भी आने लगे हैं। 1999 से आज मुश्किल से 11 साल ही हुए हैं, लेकिन अब कोई यूरोप में कहीं भी जाए या विश्व की किसी भी जगह पर जाए, आज

वहां सबसे ज्यादा इंडियन टूरिस्ट्स नज़र आते हैं। पहले एक समय में Japanese बहुत अधिक जाते थे, आज हिन्दुस्तान के टूरिस्ट्स Japanese से कम नहीं हैं - Americans बहुत जाते हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी टूरिस्ट्स बहुत अधिक है। आप स्विटज़रलैंड चले जाइए, वहां पर हर दूसरी बस आपको हिन्दुस्तानी टूरिस्ट्स की मिलेगी। केवल यूरोप में ही ऐसा नहीं है, आज लोग घर से निकलने लगे हैं, हिन्दुस्तान के अंदर भी बहुत बड़ी तादाद में टूरिस्ट्स बढ़े हैं। सिक्किम एक ऐसा प्रदेश है, जो वास्तव में स्विटज़रलैंड से भी बेहतर बनाया जा सकता है। यहां पर वर्ल्ड की highest mountain peak कंचनजंगा है। वे स्विटज़रलैंड में अपने यहां का महत्व बताते हैं कि जंगफ्रू, जो की यूरोप की सबसे बड़ी चोटी है, वहां तक ट्रेन ले जाते हैं, माउंट टिटलिस तक ट्रेन लेकर जाते हैं। वहां पूरा infrastructure developed है, हर जगह रोड्स बनी हुई हैं। यह सब कुछ सिक्किम के मामले में भी संभव है। सिक्किम के संबंध में मुझे खुशी है, अभी हमारे मंत्री जी बता रहे थे कि वहां पर रेलवे स्टेशंस का, रेल लाइनें बिछाने का काम शुरू किया गया है, लेकिन यह गंगटोक तक तो होना ही चाहिए। इसी तरीके से एयरपोर्ट का काम 2012 में पूर्ण होना संभावित है, जिसके संबंध में अभी हमारी साथी श्री ओ.टी. लेपचा जी बता रहे थे, उसके संबंध में मैं भारत सरकार से अनुरोध करूंगा कि उस एयरपोर्ट को international standard का बनाया जाए जिससे उसका रनवे इतना बड़ा हो कि वहां पर इस प्रकार की कोई समस्या न आए जिस तरह की समस्या मंगलौर में लैंडिंग को लेकर आती है। वहां पर international standard का एयरपोर्ट बनाया जाना चाहिए। सिक्किम ने केवल वहां के लोगों के लिए, बल्कि देश भर के लोगों के लिए एक बहुत बड़ा revenue earner हो सकता है। हम लोग गर्व से कह सकेंगे कि अगर यूरोप का स्विटज़रलैंड बहुत महत्वपूर्ण है तो हमारे देश के अंदर सिक्किम बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरा, टूरिस्ट्स के लिए ऐसी जगह भी बहुत महत्वपूर्ण होती है, जहां शांत वातावरण हो। मुझे खुशी है कि सिक्किम के लोग बहुत शांतप्रिय हैं। मान्यवर, मुझे खुशी है कि आप चेयर पर बैठे हैं। एक ज़माने में पूरे देश के अंदर इस बात को लेकर बहुत हर्ष रहता था, खास तौर से युवाओं में, कि हम इस बार की गार्मियों की छुट्टियों में श्रीनगर जाएंगे, पहलगांव जाएंगे, गुलमर्ग जाएंगे। अफसोस की बात है कि अभी वहां पर हालात ऐसे नहीं हैं, आज बहुत बड़ी तादाद में टूरिस्ट्स दूसरी जगहों पर जाने लगे हैं। महोदय, मैं उत्तर प्रदेश से आता हूं, मैं पहाड़ का महत्व जानता हूं, हमारा मर्म भी है। अभी हमारे माननीय साथी श्री एस.एस. अहलुवालिया जी नाम ले रहे थे, उत्तराखंड में बहुत बड़े-बड़े दर्शनीय स्थल है। जिस समय उत्तराखंड बन रहा था, उत्तराखंड का सृजन माननीय अहलुवालिया जी और उनके साथियों के द्वारा हुआ, उस समय माननीय आडवाणी जी गृह मंत्री थे। मैं यहां इस तरफ बैठा था तो मैंने इस बात का विरोध किया था कि आज उत्तर प्रदेश के लोगों के लिए हमारा एक भाई हमसे अलग हो रहा है, हम मना तो नहीं कर सकते हैं लेकिन हमको दर्द बहुत ज्यादा है। वे पहाड़, वे दर्शनीय स्थल, जहां टूरिस्ट्स का attraction था, आज हमारे उत्तर प्रदेश से वह सब निकल गया। आज हम लोगों को लगता है, हम लोगों को महसूस होता है कि वास्तव में पहाड़ का कितना महत्व है, जहां हरियाली है, पहाड़ हैं, forests हैं, पानी है और खूबसूरत पर्यावरण है। वह सब कुछ सिक्किम मैं है। मैं समझता हूं कि हिमाचल प्रदेश बहुत सुंदर है, उत्तरांचल भी बहुत सुंदर है, लेकिन सिक्किम एक ऐसा प्रदेश है जो पूरी तरह से इन सबसे भरा हुआ है। अभी लोगों का आकर्षण तो उस तरफ है लेकिन उस आकर्षण को पूरी तरह से व्यावहारिकता में नहीं बदला गया है। वहां जाकर लोगों ने देखा नहीं है, टूरिस्ट्स उसके बारे में सुनते हैं, वे वहां जाना चाहते हैं लेकिन जाने की संभावनाएं नहीं हैं, कम संभावनाएं हैं जैसे वहां एयरपोर्ट बहुत दूर है। मैं समझता हूं कि अगर वहां से गंगटोक जाना है तो कम से कम दो-तीन घंटे का पहाड़ी रास्ता है, अच्छी रोड्स नहीं हैं, कहीं रेलवे स्टेशंस नहीं बने हैं। मुझे खुशी है, उस ज़माने में चंडीगढ़ से शिमला तक की एक छोटी ट्रेन बनी थी। आज भी वह चर्चा का विषय है, उसमें जाकर बच्चे बहुत खुश होते हैं। शिमला में तो एक एयरपोर्ट भी बनाया गया है, लेकिन हम लोगों को भी अपनी फैमिलीज़ के साथ उन छोटी-छोटी ट्रेन्स में जाना अच्छा लगता है।

श्री एस.एस. अहलुवालिया: दार्जलिंग के लिए भी है।

डा. अखिलेश दास गुप्ता: जी, दार्जलिंग के लिए है। इस प्रकार ये सब चीजें जो हैं, ये सिक्किम में होनी चाहिए। इस समय हमारे माननीय खेल मंत्री जी भी यहां बैठे हैं। वे बहुत जागरूक खेल मंत्री हैं, खेल मंत्री के रूप में इनका देश को बहुत बड़ा contribution है। महोदय, सिक्किम infrastructure में स्पोर्ट्स की बहुत संभावनाएं हैं। आज राष्ट्रीय खेलों के लिए आपने National Sports Authority की तरफ से national level पर कई व्यवस्थाएं की हुई हैं, वैसे ही सिक्किम में भी अगर आप इस संबंध में सोचें तो अच्छा होगा। वहां पर कई सारी indoor games हैं, कई outdoor games भी हैं, फुटबॉल है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यहां की एक रेस है। यह एक ऐसी रेस है, जिससे खिलाड़ियों का खेलकूद में, ट्रेनिंग स्टेमिना बनता है। कभी मैं भी राष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी रहा हूं, मुझे मालूम है कि किस तरह से तीन-तीन, चार-चार घंटे ट्रेनिंग करनी पड़ती थी। हमारे साथ बहुत सारे साथी खेलते थे जो मणिपुर, सिक्किम और नॉर्थ ईस्ट से आते थे। हम लोग ट्रेनिंग करके भाग-दौड़, चार-चार, पांच-पांच घंटे मेहनत करके स्टेमिना बनाते थे, उनमें इन-बॉन स्टेमिना होता है। यह इनके अंदर अपने आप खूबी है। इनको जिमनास्टिम में ट्रेंड किया जा सकता है, फुटबाल में ट्रेंड किया जा सकता है। यह पर्टिकुलर एरिया में बहुत बड़ी संभावना है। Sikkim is the best area for that.

युवा कार्यकम और खेल मंत्री (डा. एम.एस. गिल): उपसभाध्यक्ष जी, आदरणीय मेंबर जो सिक्किम की बात कर रहे हैं और खेल के बारे में वहां पर जो कुछ हो सकता है, फुटबाल का हो सकता है, माउंटेनियरिंग तो है ही, जिमनास्टिक का हो सकता है, हर चीज का हो सकता है, वह मैं बिल्कुल जाती तौर पर जानता हूं। मैं तो 1960 में दार्जलिंग में तेनजिंग के साथ में ट्रेंड हुआ था, सिक्किम में भी रहा, जहां से रिश्ता आज तक है। जो कुछ भी सिक्किम के लिए कर सकते हैं, खेल में कर सकते हैं, वहां बिल्कुल करने के लिए मेरा ग्रेट इरादा है।

डा. अखिलेश दास गुप्ता: मैं बहुत आभारी हूं माननीय खेल मंत्री जी का और एक नया रूप मंत्री जी का पता लगा कि सन् 1960 में ये वहां वर्ल्ड क्लास माउंटेनियर के साथ वहां गए, मैं लेपचा जी आपसे अनुरोध करुंगा कि यह पार्लियामेंट में तो आपने उठाया है, अब गिल साहब को कॉफी पर, चाय पर अपने घर बुलाइए और इनके यहां भी बार-बार चाय पीने जाइए।

लेपचा जी, आपको मेरा भी धन्यवाद देना चाहिए, आप खुद भूल गए थे, मैंने माननीय खेल मंत्री जी से अनुरोध किया और देखिए, उन्होंने खड़े होकर कह दिया। लेपचा जी, हम आपके आभारी भी हैं कि आपने ऐसा रेजोल्यूशन रखा, जिस पर हम लोगों को अपने विचार रखने का मौका मिला। यह खूबसूरत प्रदेश और खूबसूरत बने, यह हम सब की मंशा है और इच्छा भी है। आपने अपने यहां बहुत संभावनाएं अपने स्तर पर ढूंढी हैं, आपकी सोसाइटी बहुत प्रोग्रेसिव है। टूरिस्ट वहीं आता है जहां सब तरह की फेसिलिटी हों, एंटरटेनमेंट फेसिलिटी हों, स्टेइंग फेलिसिटी हों। आपने भारत का पहला केसिनो भी वहीं बनाया है। यह भी आपकी एक बहुत प्रोग्रेसिवनैस है और सिक्किम के लोग निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं और मुझे उम्मीद है कि सारा हाउस इस पर यूनाइटेड है और केन्द्र सरकार भी वहां निश्चित रूप से प्रयास कर रही है। माननीय खेल मंत्री, जो सरकार के वरिष्ठ मंत्री हैं और हमारे नारायणसामी जी यहां बैठे हुए हैं, शायद वे टूरिज्म मिनिस्टर को यहां रिप्रजेंट कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि सरकार के द्वारा बहुत शीघ्र वहां इन सारे कार्यों की ओर ध्यान दिया जाएगा और सिक्किम को एक विशिष्ट राज्य मानते हुए कार्य किया जाएगा। हिन्दुस्तान के कुछ स्पॉट ऐसे हैं जिनको बहुत महत्वपूर्ण ढंग से टूरिस्ट सेंटर बनाया जा सकता है, जहां पर आसानी से आप अपनी फेमिली के साथ जा सकते हैं। आज भी वहां पर शांति है, खुशहाली है और वहां लोग खुशी-खुशी जाना चाहेंगे। हम लोग विदेश क्यों जाएं, क्यों यूरोप जाएं, हम क्यों भागते हैं अमेरिका की तरफ? मैं देखता हूं हर गर्मियों की छुट्टी में हमारे बहुत सारे साथी यूरोप जाते हैं। आज वहां मेरा बेटा पढ़ता है, संस्कृत में मेरी बेटी पढ़ती है। हर बार

आकर कहते हैं कि पापा, मेरा फलां दोस्त आस्ट्रेलिया जा रहा है, कोई फलां कंट्री जा रहा है, आप हमें कहां ले जाएंगे? तो एक मन में रहता है। हम क्यों नहीं अपने देश के अंदर ऐसी जगह जाना चाहते हैं, हम चाहते हैं उस जगह जाएं जहां बच्चे भी एन्जॉय करें, हम भी एन्जॉय करें, जहां लगे कि इस जगह पर जाकर सेफ्टी भी है, सुरक्षा भी है और साथ-साथ बच्चों को कुछ सीखने का भी मौका मिलेगा, देखने का भी मौका मिलेगा, ऐसा सिक्किम बनाने की इच्छा हर भारतीय की है और उसमें हम सब लोग सिक्किम के साथ हैं, माननीय लेपचा जी के साथ हैं। लेपचा जी, आपको बहुत-बहुत बधाई, पूरे दिल से हम आपके इस प्रस्ताव पर स्वागत करते हैं और सपोर्ट करते हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA (Assam): Sir, the natural beauty of the North-Eastern Region is God-gifted. Only those people who have visited the North-Eastern Region can recognize its beauty. It is covered with beautiful mountains, mighty rivers, animal sanctuaries and lush-green forest areas. The North-Eastern Region contributes a lot to the economy of our country because it has natural resources. We have fresh water resources; we produce crude oil and it is one of the parts of our country which can attract foreign tourists from any part of the world due to its natural beauty. Being a representative of the North-Eastern Region, I am very proud to say that I am an Indian and belong to the North-Eastern Region of this country. I am very grateful to Mr. Lepcha for moving such a good Resolution today in this House. I must congratulate you. I am standing here to speak in favour of this Resolution. Beauty of Sikkim is God-gifted. Only those people who have visited Sikkim can recognise its beauty. To attract foreign tourists, we need good hospitality, we need peaceful atmosphere, we need progressive people and we need eco-friendly people. Each of this thing is possible in Sikkim. Sikkim is very peaceful and progressive State of our country and everyone should recognize this. The State Government is doing a very good job in Sikkim. It is a very very peaceful State. Another beauty of Sikkim is its people. They are very innocent; they are very hospitable; they behave properly and they like their State. I have visited many parts of India and I have seen that people don't bother about environment. But the people of Sikkim like their State very much and they like to protect their environment. Sikkim is an environment-friendly State. Sikkim is one of the States of our country which believes in organic cultivation. I am very happy that the hon. Sports Minister, the dynamic Sports Ministers of the country, has given an assurance to the House. I would like to draw the attention of the hon. Sports Minister to the fact that Baichung Bhutia, who is the pride of our country, belongs to Sikkim. He is a great footballer. We should salute Baichung Bhutia and we should salute Sikkim for producing such a great footballer. Hon. Sports Minister, you are not only a dynamic Minister but you have first-hand experience of the North-Eastern Region. Since you are friendly towards the North-Eastern Region, you have extensively visited it. So, I request you to do something to set up a football academy and such things in Sikkim. It has a peaceful area and its atmosphere is very good. If it is done, it will give a very good signal to the people of North-Eastern Region that the Government of India is also taking interest for the development of North-Eastern Region. Sir, many people spoke about the problems faced by

Sikkim. But I would like to say that it is a new-born baby of our country. For any new-born baby, parents must take some special care of it. They need good vitamin; they need good food; they need good behaviour to grow up in a healthy way. So, parents have to look after newly-born baby. So, Sikkim is a newly-born baby of our country. The Government of India should give some special attention to the State of Sikkim in the same way as parents give special attention to their newly-born baby. My colleague, Dr. Akhilesh Dasji, very rightly said that there is no airport in the Sikkim. People have to go from Bagdogra to Gangtok. The road communication, particularly below the hill side, is very bad. There is only a small road that is there. Two cars cannot cross each other on this road. If one car is coming from the east side and the other car is coming from the west side, then the road is very narrow. So, some special attention is required for the improvement of the roads. Regarding the railway, I don't know whether the people of Sikkim are interested for this or not because they are very environment-friendly people. They want to protect their environment. This is a very good message. Sir, it is very interesting to note that Sikkim is the only State of our country where people believe in organic cultivation. They don't believe in fertilizers. Not only Sikkim, if anybody visits Tawang of Arunachal Pradesh, from a tourism point of view, in future, he would not like to visit Switzerland. The beauty of Tawang is better than that of Switzerland. But, we have failed to give proper publicity globally. At global level, our advertisements are not good.

For Assam, everybody knows the hills, everybody knows the beauty of tea gardens, and everybody knows the beauty of mighty Brahmaputra. People should know why Kaziranga is famous. It is famous for one-horned rhinoceros. There is a place in Assam, a small town just 35 kilometres from Guwahati which is known as Haju. Sir, why is Haju famous? It is famous because it is the only place in our country where *Mandir* and *Masjid* stand in the compass. We are fighting over Ayodhya. Visit Haju, visit Assam and you will see the integrity of our society. Hindus and Muslims observe the festivals of Hindus as well as those of Muslims together. They observe Eid festival together. Not only that, Sir, there is a place in Haju which is known as Pua-Mecca. Pua-Mecca means one-fourth of Mecca. The Muslim people believe that if one person visits Pua-Mecca four times, it is equal to the visit of Mecca-Medina. This is the place. But, people should know about it. People do not know much about our region. So, I would like to request Tourism Ministry that in the interest of our nation, in the interest of national integrity, they should give publicity to these places because this message should reach the entire world that India believes in secularism, and this secularism is very well protected in our country, in our North-Eastern States.

Sir, the insurgency problem of North-Eastern Region is known to everybody. All the time, the Government says that we have to solve this problem. But, the people should know that the Government of India is serious about their problems and the Government of India respects them and want to help them. If this sentiment reaches the people of North-Eastern Region seriously,

this will solve all the problems. No military is required; no Army is required. Your confidence is required. Your protection is required. With these words, I totally support the Resolution moved by Shri O.T. Lepcha, and, I hope the entire House would support him. In the end, I will again make a request to the hon. Sports Minister. He served as Secretary, Ministry of Agriculture, and, also as the Chief Election Commissioner. All the time, he looks after the interests of the people of backward regions. Sir, you are here today. You are a lover of the North Eastern Region. Please do something for development of sports in the North Eastern Region. Thank you.

श्रीमती बिमला कश्यप सूद (हिमाचल प्रदेश): महोदय, मैं ओ.टी. लेपचा जी के संकल्प पर बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। यह सच है कि सिक्किम देश के सुंदर राज्यों में से एक है। मैं भी पहाड़ी क्षेत्र हिमाचल से आती हूं, विशेषकर जिसे पहाड़ों की रानी कहा जाता है, शिमला से आती हूं। मैं पहाड़ी क्षेत्रों की समस्याओं और खूबसूरती से भली भांति परिचित हूं। बड़े शहरों में पॉल्यूशन के कारण आसमान का रंग कभी नीला दिखाई नहीं देता, पहाड़ों में घने पेड़ों से छनकर जब सूर्य की रोशनी धरती पर पड़ती है, तो रात की चांदनी से अलग ही नजारा होता है। जब ऊंची-ऊंची बर्फ से ढकी पहाड़ियों पर सूर्य चमकता है, तो देखते ही बनता है। सिक्किम के 87 प्रतिशत हिस्से में वन है यानी forest land है, वहां पर कोई कारखाने नहीं लग सकते हैं। वहां के लोगों की जीविका का साधन पर्यटक ही हो सकता है। जब एक पर्यटक आता है, तो उसे गाड़ी चाहिए, चाय चाहिए, खाना चाहिए, रहने को जगह चाहिए और गाइड चाहिए। इतने लोगों को रोजगार मिलता है। सिक्किम की तरह से ही हिमाचल प्रदेश है, वहां भी पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए। हिमाचल को तो भारत का स्विटज़रलैंड कहा जाता है। हिमाचल में भी बड़े सुन्दर-सुन्दर पर्यटक स्थल हैं, धर्मशाला है, चम्बा है और चम्बा में खजियार बहुत खूबसूरत जगह है, कुल्लू-मनाली है, किन्नौर और लाहौल स्पीति में भी कई ऐसे स्थान हैं, जिनकी सुन्दता का वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि इनको विकसित किया जाए, तो देश और विदेश से पर्यटक खिंचे चले आएंगे। हिमाचल में हरबल प्लांटेशन का हब बनाया जा रहा है, परन्तु वहां आज तक रेल मंत्री जी का ध्यान कभी नहीं गया और जो रेल लाइन अंग्रेजों के समय की थी, उससे आगे एक इंच भी नहीं बढ़ी। यहां पर बड़े Airport बनने चाहिएं जिससे by Air आना जाना सुविधापूर्वक हो तथा समय की बचत भी हो। मेरा मानना है कि सिक्किम को सुविधाएं दी जाएं साथ ही हिमाचल को भी ऐसी सुविधाएं दी जाएं। सिक्किम, अरुणाचल, हिमाचल और उत्तराखंड का सीमावर्ती राज्य है। यहां पर चीन की घुसपैठ की आशंका है। देश के दूसरे हिस्सों से लोग ज्यादा से ज्यादा संख्या में आएं तथा बार-बार आएं, इसके लिए वहां पर्यटन का बढ़ावा मिले। इससे राष्ट्रीयता को भी बढ़ावा मिलेगा। सिक्किम के राजा ने सिक्किम को बाहरी आक्रमणों से बहुत बचाकर रखा और वहां की संस्कृति व सभ्यता को भी संजोकर रखा तथा भारत का एक प्रदेश बना दिया। भारत को इस पर गर्व होना चाहिए। ऐसे ही कश्मीर के राजा ने भी कश्मीर का भारत में विलय किया था, परन्तु आज जैसी समस्या कश्मीर के साथ है, वैसी कभी सिक्किम के साथ न हो। अगर हम सिक्किम की तरफ ध्यान न दे पाएं और सिक्किम को पूरी तरह develop न कर पाएं, तो इसके लिए सड़क मार्ग बहुत अच्छे होने चाहिएं। सभी क्षेत्रों को रेल मार्गों से जोड़ा जाए और वायु सम्पर्क में भी वृद्धि होनी चाहिए। इसके लिए विशेष वित्तीय सहायता प्रदान की जाए। कहीं कल को यह दूसरा कश्मीर न बन जाए, इसका ध्यान भारत सरकार को रखना चाहिए। हिमाचल, सिक्किम आदि जो पहाड़ी क्षेत्र हैं, पूरे देश के लिए ऑक्सीजन के सिलेंडर का काम करते हैं। यहां पर जड़ी बूटियां भी होती हैं, जो भारत के नागरिकों को दवाइयों के रूप में जीवन देती हैं। भारत सरकार का ध्यान इन क्षेत्रों की ओर अधिक होना चाहिए और इन राज्यों को विशेष सहायता उपलब्ध करानी चाहिए। मेरा भारत सरकार से यह अनुरोध है कि सिक्किम को और उसके साथ जो हमारे पहाड़ी क्षेत्र हैं, उनकी तरफ ध्यान दे और ज्यादा से ज्यादा वित्तीय सहायता प्रदान करे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करती हूं।

SHRI SILVIUS CONDPAN (Assam): Thank you, Sir. I rise to support the Resolution moved by the hon. Member, Shri O.T. Lepcha, to develop tourism in the State of Sikkim. He has already mentioned in his speech while moving the Resolution that Sikkim is fully gifted with nature and the people of Sikkim and the Government of Sikkim, in particular, are very careful from destroying the gift of nature that is given to them. Very many States in our country have ruined the gift of nature by damaging forests. Now, they are suffering because of the change of nature and change of climatic conditions. As my friend, Mr. Baishya, I also come from the North East. There was a time during the British regime when the undivided Assam was known as Scotland of East. Today, industries have not come in the North East as they should have, for various reasons. I don't want to dwell on those points. But as far as this Resolution is concerned, for development of tourism industry, there is ample scope to be taken up by the Government of India which would have been a very important source of revenue for the Central exchequer. At the same time, youths who are today termed as extremists could have been brought to a normal situation by giving them employment opportunities, by developing the tourism industry in all the eight States, including Sikkim regarding which there is the Resolution today for discussion. Our hon. Member Ahluwaliaji dealt with many important points concerning tourism development in Sikkim. Similarly, Sir, same attractions are available in Arunachal Pradesh, in Nagaland, in Mizoram, in Manipur and in Assam. But the tourism department ...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. SAIF-UD-DIN SOZ): Excuse me, the time for the Private Members' business is over.

SHRI SILVIUS CONDPAN: Sir, shall I continue?

श्री ओ.टी. लेपचा: सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि बोलने वाले बहुत थे, लेकिन शानिवार होने के कारण चले गए हैं, इसलिए आप इसको अगले सेशन में कंटीन्यू रखें।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PLANNING AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI V. NARAYANASAMY): It will be continued in the next session. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. SAIF-UD-DIN SOZ): The sense of the House is that we shall take up this Resolution in the next session. Further discussion on this Resolution will take place in the next session. The House stands adjourned till 11.00 a.m. on Wednesday, the 25th August, 2010.

The House then adjourned at forty-five minutes past four of the clock
till eleven of the clock on Wednesday, the 25th August, 2010.